श्री।

जैनव्रतकथासंग्रह-रत्न।

जिसमें

ऋषिपंचमीव्रतकथा १ सुगंधदशमीव्रतकथा २ अनंतपंचमी
व्रतकथा ३ रत्नत्रयव्रतकथा ४ दशलक्षण व्रत कथा
५ मुक्तावलीव्रतकथा ६ रविव्रतकथा ७ पुष्पां
जलिव्रतकथा ८ नंदीश्वरव्रतकथा ९

जो

व्रतके दिन पढना सुनना अत्यावश्यक है जिनमे व्रतोंकी
विधि उद्यापन और उनका माहात्म्य और फल
पाने वाले पुरुषोंके चरित्र है।

जिसको

सर्व भाषानुरागी जैनी भाइयोंके हितार्थ भाषा पद्य दोहा
चौपाइयोमे मुन्शी नाथूरामलमेचू जैनी बुकसेलर अनेक
जैनी भाइयोंके प्रार्थना पत्र आनेसे उनकी धर्मोन्न-
तिमें अभिरुचि देख रचना किया।

वही—

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई

स्वकीय "श्रीवेंकटेश्वर" यन्त्रालयमें

छापकर प्रसिद्ध किया।

संवत् १९५२ शके १८१७

प्रस्तावना

दोहा ॥

भोजन निद्रा भयरु रति, नर अरु पशुहि समान ।
पशुसे नरमें एकही, अधिक विवेक सुजान ॥ १ ॥

प्रगट हो कि वर्तमानकालमें छापा प्रचलित होनेसे सर्व जातिमतके लोग प्रवीण और विद्वान होगये हैं ।और दिन पर दिन होते जाते हैं ॥ केवल वे लोगही मूर्ख हीनदशामें पढ़े हैं, जो आप स्वार्थ लोभी मिथ्याभिमानी पंडितोंके फंदमें फँस रहे हैं । कारण कि उक्त पंडित भली भाँति जानते हैं, कि अब हमारी आजीविका केवल धर्मकी आड़में चलती है (बिंब प्रतिष्ठा, मंदिर प्रतिष्ठामें खूब धन मिलता है) और आदर मानभी है । जो धर्म ग्रंथ छप जानेसे शुद्ध और सस्ते बहुताइतसे मिलने लगेंगे, तो सब लोग जानकर घर २ में पंडित हो जावेंगे । तो हमेकूं कौन पूछेगा । बरन् आदर मानके बदले हमारी पोल खोलेंगे । जैसी कि अभी हम यतीभट्टारकों की खोलते हैं । क्योंकि यतीभट्टार्के लोग जो मानगिरिपर आरूढ़ थे । अनेक आडंवर (परिग्रह)रखनेवाले उन्होंनेभी ऐसी युक्तियां रखीक्थीं।कि श्राव लोग मूर्ख रहें, तो खूब सेवा करें, धन देवें और ऐब को न जानें ॥ न रहेंगे बांस न बजेगी बांसुरी ॥ इसलिये ज्ञान और ज्ञानके उपकरण शास्त्रोंकी असल विनयको गुप्त कर

उनकी उपचार विनय गलेमें लटका दी ॥ ज्ञानकी असल विनय यह है, कि सदा आदर पूर्वक रुचिसे शास्त्रोंको पढ़ें सुनें स्मर्ण रक्खें उनके अर्थ आशयपर विशेष ध्यान देवें, कालांतरमें भूलें नहीं । तो दिनोंदिन ज्ञानकी वृद्धि होवे यही ज्ञान विनय है । और यही कार्य कारी है । सो शास्त्र पढ़ते सुनते समय तो मन न लगनेसे सोते व ऊंघते हैं यां नाना प्रकारकी व्यापारिक चिंतामें मग्न हो चाहते हैं कि कब पढ़ना बंद हो, बरन् कहभी उठते हैं, कि स्थल करो। इसीसे बीस २ वर्ष शास्त्र सुनते हुए, परंतु कुछभी नहीं समझते हैं । और न इस कुरीतिके मिटनेको कुछ दंड मुकर्रर करने हैं । करे कौन पंडितजीतो चेतही नहीं दिलाते । सो चेत क्यों दिलावें वे तो चाहते हैं, कि मूर्खही रहें तो अच्छा है ॥ अब उपचार विनय सुनिये । उपचार विनय यह है, कि पुस्तकोंको ऊंचे स्थानपर रखना जिससे दीमक, चूहे, झींगुर व सीढ़ आदिसे बचें । अथवा सुंदर दृढ़ वस्त्रोंमें दृढ़ बंधनसे बांधना जिससे फटें मुड़ें नहीं । यह नहीं कि पुस्तकको बगलमें मत दाबो । माथेपर रखके चलो । बरन् माथेसेभी हाथ ऊंचे करके चलो । और जरी व रेशमी वस्त्रोंमें लपेट धरो । विचारिये कि इस लोकारिझाऊ विनयसे क्या ज्ञान प्राप्ति होगा? जब होगा तब मन लगाकर पढ़ने सुननेहीसे होगा । जैसे नपुंसकको कितनेही वीर पुरुषत्व सूचक वस्त्र शस्त्र अलंकार पहिनाइये । परंतु जो कार्य पुरुषके करने योग्य है उसके करनेको वह

नपुंसकही रहेगा। और पुरुषको वैसे वस्त्र शस्त्र अलंकार नहींभी पहिनावो तौभी वह अवसर पर पुरुषके करने योग्य कार्य करनेको समर्थ होगा। और यहभी सोचिये कि फल जो कुछ होता है सो भावके अनुसार होता है। ऊपर के भेषके अनुसार नहीं। सो जब ऊपरसे तो बार २ नमस्कार करना ऊंचे स्थानपर रखना और मनमें यह कि कब स्थल करें, तो कहो क्या विनय हुई? इससे यही सोचना चाहिये कि चाहो मंदिरमें पढ़ो, चाहो घर या दूकानपर फुरसतके अनुसार मन लगाकर पढ़ो, तो अवश्य स्मरण रहेगा। आजकल लोगोंका पंडितोंके भुलावेसे उपचार विनयपर अधिक ध्यान है। इसीसे मूर्ख दशामें हैं। अविनयका ऐसा भय दिखाया है कि सिवाय मंदिरके अन्य स्थानमें शास्त्राभ्यास करेही नहीं। सो एक तो मंदिरमें अभ्यास करनेको दो घड़ीभी एक चित्त हो फुरसत नहीं। दूसरे लिखे हुए ग्रंथ महँगे होनेसे इच्छानुसार अभ्यासको मिल नहीं सकते तीसरे भ्रमायल अशुद्ध लेख होनेसे जल्दी समझमें नहीं आते। चंदेरी आदिके सस्ते लेखकोंने ग्रंथ ऐसे अशुद्ध करादिये हैं कि सोधे जावें तो छींटका थान बन जावें। तो कहो ऐसी कुरीतिसे क्या अभ्यास बढ़ेगा। यदि छपे शुद्ध ग्रंथ सस्ते मिलें तो हर कोई लेकर अपने मकानपर अभ्यास कर प्रवीण हो सकता है। देखिये जब लोगोंकी दूकान कम चलती दीखती

है तब यातो कोई किस्से आदिकी छपी पुस्तक पढ़ समय काटना पड़ता है या कोई व्यर्थ खेल या गप सपमें समय बिताने पड़ता है । यदि उस समय कोई धर्म ग्रंथ हाजिर हो तो जरूर पढ़ें और यादि करें । जो धनवान हैं । सो तो मदांधलापरवाहीसे अभ्यास नहीं करते । और निर्धन हैं तिन्हें एक तो ग्रंथही मुअस्सर नहीं होते, दूसरे बेफि-क्रीका समय नहीं मिलता है । जो प्रहर आधप्रहर निरा-कुलतासे मंदिरमें शास्त्राभ्यास करसकें क्योंकि बहुतसा समय तो उदर निमित्त चाहिये । इससे जैनियोंमें पंडि-तोंकी संख्या इतनी थोड़ी है कि मानो शून्यताही है । का-रण कि जो मोहनी मंत्रकी धूल यती लोगोंने डालीथी । वही हालके पंडितभी आंखोंमें झोंक अंधे कर रहे हैं । जो पूजा प्रतिष्ठामें आमदनी यती लेते थे वही अब उक्त पं-डित झगड़ २ के बटोर रहे हैं । इससे अब लोगोंको वि-चारकी आँखें खोलना चाहिये । और पुस्तकोंके छपानेमें अपना परमकल्याण समझना चाहिये और पुस्तकोंकी वृद्धिसेही ज्ञानकी वृद्धि समझना चाहिये । और यहभी सोचना चाहिये कि जो डर उन्होंने छुआछीतका दिखाया है, वहभी भ्रम है । देखो समोशरणमें चौपाये तक जाना लिखा है । किसीको मनाई नहीं है । फिर भगवानकी वा-णीको अधमोद्धारणी लिखा है । सो यदि वह अधमके दे-खने सुनने छूनेसे बिगड़ जायगी तो उनका उद्धार कैसे कर सकेगी जैसे कुधातु जो लोहा तिसके छूनेसे पारस बि-

गड़ जाय तो लोहेको सुवर्ण कैसे कर सकेगा? । और पूज्य भगवानके वचन हैं तिन्हें अधम सुनतेही हैं। कागज कुछ पूज्य नहीं। यदि कागज पूज्य होता तो बही खातेभी मंदिरमें पूजे जाते। इसके अनंतर यहभी सोचो कि दूसरे मत व वर्णके लोगोंकी घृणा करना, उनसे पुस्तकें छुपाना यह वैर बढ़नेका एक मुख्य कारण है। क्योंकि जो लोग कहते हैं, कि जैन ग्रंथोंमें रामचंद्र कृष्णचंद्र आदिकी निंदा लिखी है, यदि नहीं है तो हमसे ग्रंथ क्यों छुपाते हैं! इससे हमारे धर्मके निंदक द्वेषी हैं यदि वे लोग पद्मपुराण, हरिवंशपुराण, देखें तो जान लेवेंगे कि राम, कृष्णकी निंदा नहीं बरन् प्रशंसा लिखी है। जब ऐसा देखें तब विघ्नके पलटे वही सहायता करें। दूसरे जब इस धर्मके चलानेवाले मुख्याधिकारी क्षत्रिय हैं जिनके कुलमें जिनेंद्रके चौवीसो अवतार हुए फिर बड़े खेद और आश्चर्यका विषय है कि वेही अपने पूर्वजों का चरित्र न देखें सुने और न उनका महत्व देखसकें। बहुत लिखनेसे क्या सब लोगोंको विचार करना चाहिये और धूर्त लोगोंकी फांसीसे बचना चाहिये। क्रम २से इस महत् कार्यको मैं कटिबद्ध हो अकेलाही करूंगा यदि ऐसे समयमें जो लोग तन मन धनसे सहायता देवेंगे वे अपने दीन जैनी भाइयोंपर (जो चातककी भाँति छपे जैन ग्रंथोंकी चाहमें हैं) बड़ा उपकार करेंगे।

आप लोगोंका शुभचिंतक

नाथूराम लमेचूभाई–बुकसेलर कटनी मुड़वारा

सूचीपत्र

इति ।

श्रीः।

श्रीजिनेन्द्राय नमः।

अथ ऋषिपंचमीव्रतकथा भाषा।

दोहा—वन्दों श्रीजिनराजके, चरण कमल गुण हीर।
भव समुद्र तारण तरण, हरण सकल भव पीर॥ १॥
वन्दों जिन वाणी सुभग, जाते दुरित नशाय।
कथा पंचमीकी कहूं, गुरुके लागों पाँय॥ २॥

चौपाई:—

राज गृह नगरी शुभ वसै। श्रेणिक महाराज अति लसै॥
एक दिवस वन्दे जिनराजा। श्रेणिकप्रश्नकियासुखकाजा ३॥
व्रत पंचमी कहो जिनदेवा। किन पायो फलकर व्रत सेवा॥
तव गणधर वोलेसुनसंता। हस्त नागपुर वसे महंता॥४॥
धनपतिनगरसेठ तहँवसै। कमलश्री वनिता गृह लसै॥
पुत्र सुभविकदत्त तिसगेह। भयो पुनीतमदनसमदेह॥५॥
धनपतिऔर विवाहीत्रिया। नामरूपश्रीपति अतिप्रिया॥
तवकमलश्रीअतिदुखसहै। पुत्रसहितन्यारेगृहरहै॥ ६॥
धनपति रूप श्रीआनन्द। वन्धुदत्त सुत उपजो चंद॥
ज्यों ज्यों बड़े सयाने भये। त्यों त्योंसकलकलागुणलये ७
एक दिवस मिलदोनोंभ्रात। धन विढ़वनकोकहियोवात॥

तात गात आनंदित भयो । रत्नदीपको आयसुदयो ॥८॥
संगलये योद्धा बहु धीर । लये पाटअम्बर वर चीर ॥
वणिज योग्यलीनेसबसाज । रत्नाभूपणवर गजबाज ॥ ९॥
भविकदत्त मातासे बात । कही वनिजको पठवततात ॥
बन्धुदत्तपुनि संग सुचले । औरभि लोग संगहैं भले १०॥
सुन माता तब धधकोहियो। तुम बिछुड़ें सुत कैसे जियों ॥
तुम गृह मंडनकुलआधार । तुम विनसबसूनोसंसार॥११॥
अरु तुम संग सोतिकापूत । सो व्यसनी सुनियतहै धूर्त ॥
जो हठ पुत्र वणिजकोजाउ । तोधूर्तकोमतपतिआउ ॥१२॥
नदी नखी जो शृंगी जीव । अरु दुर्जन करशस्त्रसदीव ॥
अरु वेश्याके घरमें वास । तिनकासुतमतकरोविश्वास १३
यह माताकी सुनिकरबात । रोम २ आनंदो गात ॥
चलतं शकुनसबनीकेभये । चलत२सागर तटगये ॥१४॥
तहाँ भरे प्रोहन जो अपार । वस्तु गिणत बाढ़े विस्तार ॥
गये तिलक पट्टनके तीर । जामें कोइ जाय नहिंधीर१५॥
भविकदत्त चितकीनोचाव । गयो नगरमें कर उच्छाव ॥
शून्य नगर ना कोई बसै । वस्तु बजार हजारोंलसै॥१६॥
निर्भय भयो गयो सो तहां । चैत्यालयजिन वर को जहां ॥
वंदे चंद्र प्रभू जिनराज । सुफल जन्मतिनमानोंआज१७
बन्धुदत्त ने कीनोंद्रोह । यान चलाये छोड़ो मोह ॥
कुछयक दिनमें पहुँचेतहाँ । रतद्वीपपट्टन है जहाँ ॥ १८ ॥
भविकदत्त फिरआयोथान । शून्य देख मन भयो मलान ॥

मातावचन सुमर मनधीर। फिर आयो जिनवरके तीर १९
ननी बात यहांही रही। अब यह कथा मात पर गई॥
पुत्र मोह की व्यापी पीर। कमलश्रीमन धरे नधीर २०॥
क्षण २ दीर्घले निश्वास। भूली सुधिबुधि भूख नप्यास॥
संग सखी जो स्यानीलई। अवधिज्ञानमुनिवरढिगगई २१
वन्दि मुनीश्वर पूछे सोई। जासे पुत्र मिलन अब होई॥
जासेसुख परमानंदलहों। बिछुरापुत्रमिलैसोकहो॥२२॥
सुने वचन तब मुनिवरकहैं। ज्यासों रोगशोक सब दहैं॥
जासे स्वर्गमुक्तिफल होइ। व्रत पंचमी करो भविलोइ २३
जोड़ कमलश्रीकर दोइ। कहो मुनींद्र कौन विधिहोइ॥
सुनधुनिमुनिबोलेअभिराम। मास आषाढ़सुक्लकौधाम २४
जबहिशुक्लपंचमिदिन होइ। तबही व्रतकीजे भविलोइ॥
व्रत के दिन छोड़ो आरंभ। जिनवर जजो तजोसबदंभ२५
वर्ष पंच अरु मास हि पंच। ये सब व्रत पैंसठ सुनसंच॥
जब यह व्रत पूरे होलोइ। यथा शक्ति उद्यापन होइ॥२६
लीनो व्रत कमलश्रीं भाय। सब दुखताकेगये पलाय॥
कथासुभविकदत्त कीठहीं। नगरभ्रमोसोगयोनहिंकहीं २७
पहुँचो राजाके दरबार। दिन आंथयो भयो अँधियार॥
तहां न कोई मानव रहै। कासों बात चित्त की कहै २८
नृप की सुता रूपगुणखान। बोली तासों करसन्मान॥
अहो धीर तुम आये कहां। कौन जातिपुर निवसोकहां२९
कौनभांतितुमआगमभयो। यह संदेह भयो मोनयो॥

तासे भविक दत्त वृत्तांत । अपनोकहो भयो तब शांत ३०
सुन पुनिराजकुँवरियों कहै । एक महाराक्षस यहँ रहै ॥
ताने पुर कीन्हों विध्वंशा । नर नारिनकारहा नवंशा॥३१
वह पुत्री कर राखी मोही । ना जानों अब कैसी होही ॥
तुम्हें देख वह करिहै क्रोध । सदा लेत मानुपका शोध॥३२
अब मैं एक जो तुमसे कहों। मैं द्वारे मंदिर के रहों ॥
तुम भीतर रहिदेउकिवार । तो वासे कुछहोइउबारा॥३३॥
कुँवर राखि दृढ़दयेकिवार । आप रही मंदिर के द्वार ॥
तबै निशाचर आयो तहां । पुत्री मंदिर बाहर जहां ३४ ॥
सो हठ कर मंदिर में गयो । देख कुँवर प्रमुदित मन भयो॥
अब मेरे सांझे सब काज । तुम दर्शन पायों मैं आज॥३५
तुमतो मेरे मित्र निदान । कन्या राखी तुम्हरे जान ॥
अब मोकोंतुम अतिसुखदेऊ। कन्या राज पाट सबलेऊ॥३६॥
तबहिअसुरनेकियो विवाह । कन्या दे कीन्हों उत्साह ॥
भविकदत्तअरु राजकुमारी ।सुखसेरहतसुमहलमझारी३७॥
सप्त खने मंदिर के रहैं । तात मातकी सब सुधि कहैं ॥
यह तो लब्धि सु इनकोभई । कथा जो बंधुदत्त की ठई ३८॥
वस्तु बेच अरु लीनी नई । नफा न एक दाम की भई ॥
सो भर यान देश को चले । बिच नीच तस्करबहु मिले ३९
तिन मिल लूट लयोसबसंग । कठिन कष्ट से छोड़े नंग ॥
आये फेर तिलक पुरथान । भविकदत्तअवलोकेजान॥४०॥
दम्पति लखिआनंदितभये । तब सब मिल आगे हो लये ॥

बन्धु दत्त पावों पड़गयो। तुमविनभ्रातमहा दुखलयो ॥
चोरों लूट लये हम सबै। कठिन कष्ट से छोड़े अबै ॥
भविकदत्त हँस बोलोवीर। कछु शंका मतकरोशरीर४२॥
मेरे बहु लक्ष्मी भंडार। रत्न जहाज भरो इक सार ॥
ऐसे कह सब गृह में गये। वस्त्राभूषणसब को दये॥४३॥
षट रस व्यंजन भोजन करे। तासे सबहिकष्ट परिहरे॥
कर सन्मान यान भरदये। सर्वलोगप्रमुदितमन भये ४४॥
बन्धुदत्त विनवैं कर सेव। अब तुम चलो देश को देव॥
धर्म धुरंधर कुल आधार। तुम सम नहीं पुरुष संसार ४५
तात मात के दर्शन करो। यासेसकल कष्ट परिहरो ॥
अरु भावज से विनतीकरी। सुन धुनिसोबोली गुणभरी४६
अबप्रियजियकीजेसतभाव। देखैं कमलश्री के पांव ॥
अरुसबमिलजुकहीहठबात। भविकदत्त तब मानीभ्रात४७
वनितासहितचढ़ोसोजहाज। त्रियबोली भूली प्रिय शाज ॥
देव अनर्घ दिया संदूक। वस्त्राभरण भरे गइ चूक॥४८॥
सुनी धनी वाणी निजत्रिया। ऋद्धिसिद्धि बिन कम्पो हिया॥
भविकदत्त आतुर हो धाय। नगर मध्य सो पहुँचोजाय४९
बन्धु दत्त चित चिंतो क्रूर! भ्राताहि छाँड़ गयो पुनि दूर ॥
वणिकोसहितमंत्रातिनकियो। सबहिदानमनवांछित दियो५०
पहुँचे जाय समुदके तीरा। निज नगरी आये धर धीर ॥
मिले सबहिजनगणअरुतात। मात मिलीप्रमुदितमनगात५१
देख अपूर्व वस्तु संयोग। भये सर्व विस्मययुत लोग ॥

अरु सुंदरि घर भीतर लई । रूपश्री आनंदित भई ॥५२॥
ताहि देख सब पुर नर नारी। कोई नहीं तास उनहारी ॥
माता बन्धुदत्त से कहै ।यह सुंदरि दुःखित क्यों रहै५३
कौननगरकिसकीयहधिया । किन उपकारसुतुमपरकिया॥
सुनध्वनिबन्धुदत्तमुखहँसो । रत्नद्वीपसागरमेंबसो ॥ ५४ ॥
पृथ्वीपालनृपतिकी सुता । राजादई हमें गुणयुता ॥
मात तात गृहकीसुधिकरै । अखिल देख धीरनहिंधरै५५॥
हमतुमबिननाकियोविवाह । सुन ध्वनि सो आनंदो साह ॥
ऐसेही सब साथिनकही । तब सबके मनआई सही५६॥
सुन सबके मनभयोउछाह । कीजै बंधुदत्तका व्याह ॥
शोधघड़ी पंडितने कही । व्याह करो तिन दूजे सही५७
कामिन गावें मंगलचार । विविध भांति दीनी ज्योंनार ॥
कुँवारि रही मंदिर सतखनै । निंदिकर्ममुखजिनवरभनै५८॥
करसाहस दृढ़ दये किवार । त्यागे तिलक ताम्बूलाहार ॥
ऐसे यहां कथांतर होइ । भविकदत्तसुधिकहैनकोइ ५९
भविकदत्त नगरीमें गयो । सब सामग्री ले आइयो ॥
देख शून्य थल लईपछार । मुख जंपे धिक् २ संसार ६०॥
तब वह देव भयो प्रत्यक्ष । भविकदत्तहम तुम्हरी पक्ष ॥
अब तुम हमकोआज्ञा देव । पुंजवों मन वांछितकरसेव६१
भविकदत्तयह कहीनिदान । पहुँचों जाय मातके थान ॥
देव सुभग बहु लीनो शाज । रत्न पटाम्बर गजअरुवाज६२
चढि विमानमें पहुँचो तहां । कमलश्री पौढी थी जहां ॥

देख विभूति पुत्रकी सोइ। सत्यकिधोंयहस्वप्नाहोइ॥६३॥
भविकदत्त बोलो वर बीर। मिलो माय मोको धरधीर॥
सुनेवचन तव संशय गयो। गद्दभर अंकपुत्रभेटयो॥६४॥
बंधुदत्त जो कीनो पाप। कहो सर्व मातासे आप॥
माता बोली कर उत्साह। तासे बंधुदत्त करे व्याह६५॥
सो नित चित्त पतिव्रतधरे। तासे मूढ व्याह विधिकरे॥
सो तो वहू तुम्हारी आइ। ताको देहु पारनो जाइ ६६॥
वस्त्राभरन बहूके जिते। माताको पहिराये तिते॥
अरु निजकरकी मुँदरी दई। बैठ सुखासनसों तहँ गई ६७॥
कमलश्री आवतही देख। रूपश्री मन भई विशेष॥
मिलींपरस्परजियसुखभयो। करसन्मानबैठकादयो॥६८॥
कमलश्रीमंदिर पर गई। वचन सुनाय सो ठाढ़ी भई॥
तवतिन जानीअपनी सास। पड़ी पाँव हठलईउसास६९॥
अरु सुतकोआगमनसुनाइ। दे भोजन गृह पहुँचीजाय॥
भविकदत्त राजापरगयो। मिल राजा आनंदितभयो७०
तवै राय सुन सो वृत्तांत। क्रोधन सकोसम्हारि महंत॥
किंकर पठये पहुँचे जाय। बंधुदत्तको लाये धाइ॥७१॥
आये लोग संग के सवै। पूँछोतिन्हें सोंह दे तवै॥
तिन राजा से साँचीकही। सबधनभाविकदत्तको सही ७२
राजासुनतकोपअतिकियो। बन्धुदत्तकोदण्ड जु दियो॥
अपनिसुता पुनि दीनीराइ। कर विवाह मंदिर पहुँचाइ॥७३
भविकदत्त माता गुणभरी। पुत्रलयो मैंने शुभ घरी॥

मैं व्रत कियो पंचमी तनों । जाते भयो अतुल धनघनो ७४
तिनभीधुनिसुनकेव्रतलियो। भाव सहितविधिपूर्वक कियो॥
उद्यापन विधि पूरण करी । जाते भूरिलच्छि विस्तरी ७५
दोय २ सुत तिन के भये । नित २ करत महोत्सव नये॥
भविकदत्त दीक्षा व्रत लयो । दशवें स्वर्ग जाय सुर भयो ७६
भुगते भोग परम सुख नयो । दयावन्त फिर मुक्तहि गयो ॥
श्रेणिकसुनतसबहिव्रतकरो । तिन सब घोर दुःखपरिहरो ७७
और जो करे भाव से कोइ । ताको स्वर्ग मुक्ति सुख होइ ॥
सत्रह सौ सत्तावन जान । मिती पौषसुदिदशमी मान ७८
हतीकंत पुर में रचि कथा । श्री सुरेंद्र भूषण मुनियथा ॥
श्रावकपढ़ोसुनो धर ध्यान । जासे होइ परम कल्याण॥७९

इति श्रीऋषिपंचमी व्रतकथा भाषा सम्पूर्णम् ॥

अथ सुगंधदशमी व्रतकथा भाषा ॥

चौपाई ॥

वर्द्धमान वंदों जिन राय । गुरु गौतम वंदों सुख दाय ॥
सुगंध दशमी व्रतकी कथा । वर्द्धमान सुप्रकाशी यथा॥१॥
मागध देश राज गृह नाम । श्रेणिक राज करे अभिराम ॥
नाम चेतना गृह पटरानि । चंद्र रोहिणी रूप समान २॥
नृप बैठो सिंहासन परे । वन माली फल लायो हरे ॥
कर प्रणाम वच नृपसेकहो । चित्त प्रमोदसे ठाढ़ोरहो॥ ३॥
वर्द्धमान आये जिनस्वामि । जिनजीतो उपत अरिकाम ॥

इतनीसुनत नृपातिउठचलो। पुरजनयुत दलबलसेभलो॥४॥
समोशरण वन्दे भगवान। पूजा भक्ति धार बहु मान॥
नर कोठा बैठो नृप जाय। हाथ जोड़ पूछे शिरनाय॥५
सुगंधदशमीव्रतफलभाषि। ता नर की कहिए अबसाखि॥
गणधर कहें सुनो मगधेश। जंबूद्वीप विजयार्द्ध देश॥६॥
शिव मंदिर पुरउत्तरश्रेणी। विद्याधर प्रीतंकर जैनी॥
कमलावती नारिअति रूप। सुर कन्यासे अधिक अनूप ७॥
सागरदत्त बसे तहां साह। जाके जिन व्रतमें उत्साह॥
धनदत्ता वनिता गृहकही। मनोरमा ता पुत्री सही॥ ८॥
सुगुप्ताचार्य गृह आइयो। देख मुनींद्र दुःख पाइयो॥
कन्या मुनि की निंदाकरी। कुछमनमें नाहिं शंकाधरी॥९॥
नग्न गात दुर्गंध शरीर। प्रगट पने देही नहिं चीर॥
मुखताम्बूलहतो मुनिअंग। मानो सुख को कीनोभंग १०
भोजन अंतराय जब भयो। मुनि उठजाय ध्यानवन दयो॥
समता भाव धरें उरमांहि। किंचित खेद चित्त में नाहिं ११
बीतीअवधिसमयकुछगयो। मनोरमा का कालसु भयो॥
भई गधी पुनि कुकरीग्राम। अपर ग्राम भई सूकरीनाम १२
मगधसुदेशतिलकपुरजान। विजयसेन तहँ का नृप मान॥
चित्ररेखा ता रानी कही। ता पुत्री दुर्गंधा भई॥ १३॥
एक समय गुरु वंदन गयो। पूजा कर विनतीको ठयो॥
मो पुत्री दुर्गंध शरीर। कहो भवान्तर गुण गंभीर १४
राजा वचन मुनीश्वर सुने। मुनि वृत्तान्त राय सेभने॥

सब वृत्तान्तपाछिलोजान। मुनिराजा से कहो बखान १५॥
सुन दुर्गंधा जोड़े हाथ। मो पर कृपा करो मुनि नाथ॥
ऐसा व्रत उपदेशो मोहि। यासे तनु निरोग अब होहि १६
दयावन्त बोले मुनिराय। सुन पुत्री व्रत चित्त लगाय॥
समता भाव चित्तमें धरो। तुम सुगंध दशमी व्रतकरो १७॥
यहव्रतकीजेमनवचकाय। यासे रोग शोक सबजाय॥
दुर्गंधा विनवे निकुताय। कहिये सविधि महामुनिराय १८
ऐसे वचन सुने मुनि जबे। तब बोले पुत्री सुन अबे॥
भादों शुक्लपक्ष जबहोइ। दशमी दिन आराधो सोइ॥१९
चारों रस की धारादेव। मन में राखो श्री जिनदेव॥
शीतलनाथकी पूजाकरो। मिथ्या मोह दूर परिहरो॥ २०
व्रत के दिन छोड़ो आरंभ। यासे मिटे कर्म का दंभ॥
याके करत पापक्षय जाय। सो दश वर्ष करो मनलाय२१
जब यह व्रत सम्पूर्ण होइ। उद्यापन कीजे चित जोइ॥
दशश्रीफलअमृतफल जान। नीबूसरससदाफलआन॥२२॥
दश दीजेपुस्तकलिखवाय। यह विधि सब मुनिदईबताय॥
विधि सुन दुर्गंधाव्रतलयो। सब दुर्गंध ततक्षण गयो॥२३
व्रत करआयु जोपूरणकरी। दशवें स्वर्ग भई अप्सरी॥
जिन चैत्यालय वंदन करे। सम्यक भावसदा उर धरे २४
भरत क्षेत्र तहँमगधसुदेश। भूति तिलकपुर बसे अशेष॥
राजा महीपाल तहांजान। मदन सुन्दरी त्रिया बखान२५
दशवें दिवसे देवी आन। ताके पुत्री भई निदान॥

मदनावली नाम धर तास ।अतिसुरूपतनुसकलसुवास२६
बहुत बात को करे बखान । सुर कन्या नाता उन्मान ॥
कोसांबीपुर मदन नरेंद्र । रानी सतीकरे आनन्द॥२७॥
पुरुषोत्तम सुतसुन्दर जान । विद्यावंत सुगुणकी खान ॥
जो सुगंध मदनावलिजाय । सो पुरुषोत्तमको परनाय २८
राजा मदनसुन्दरी बाल । सुखसे जात न जानो काल ॥
एक दिवस मुनिवर वंदियो । धर्मश्रवणमुनिवरपरकियो२९
हाथ जोड़ पूछे तब राय । महा मुनींद्र कहो समझाय ॥
मो गृह रानी मदनावली । ता शरीर सौरभता भली ३०
कौन पुण्यसे सुभगस्वरूप । सुरवनितासे अधिक अनूप ॥
राजा वचन मुनीश्वर सुने । सब वृत्तांत रायसे भने ॥३१॥
जैसे दुर्गंधा व्रत लहो । तैसी विधि नरपतिसे कहो॥
सुने भवांतर जोड़े हाथ । दिक्षाव्रत दीजे मुनिर्न्ग्रंथ३२॥
राजाने जब दिक्षा लई । रानी तबे आर्जिका भई ॥
तप कर अंत स्वर्गको गई । सोलम स्वर्ग प्रतेंद्रसो भई३३
बाइससागर काल जो गयो । अंतकाल ता दिवसे चयो ॥
भरतसुक्षेत्र मगध तहँ देश । वसुधा अमरकेतु पुर वेस३४
ता नृपग्रेहजन्म उनलहो । जो प्रतेंद्र अच्युत दिव कहो ॥
कनिककेतु कंचनद्युतिदेह । वनिता भोग करे शुभग्रेह३५
अमरकेतु मुनिआगमभयो । कनिककेतु तहँ वन्दनगयो ॥
सुनो सुधर्म श्रवण संयोग । तजे परिग्रह अरुभव भोग३६
घाति घातिया केवल भयो । पुन अघातिहनिशिवपुरगयो॥

व्रत सुगंध दशमी विख्यात । ताफलभयोसुरभियुतगात्र३७
यह व्रत पुरुष नारि जोकरे । सो दुःख संकट भूलि न परे॥
शहर गहेली उत्तम बास । जैन धर्मको जहां प्रकाश ३८
सबश्रावकव्रत संयम धरें । पूजा दानसे पातक हरें ॥
उपदेशी विश्व भूषणसही । हेम राज पंडितने कही ३९॥
मन वच पढ़े सुने जो कोइ । ताको अजर अमर पद होइ॥
यासे भविजनपढ़ोत्रिकाल । जो छूटें विधिके भ्रमजाल४०
इति श्रीसुगंधदशमीव्रतकथा भाषा सम्पूर्णम् ॥

अथ अनंत चौदशव्रत कथा भाषा ।

दोहा—अनंतनाथ वन्दों सदा, मनमें कर बहु भाव ।
सुर असुर सेवत जिन्हें, होय मुक्ति परचाव॥१॥

चौपाई ॥

जंबूद्वीप द्वीपोंमें सार । लखयोजनताका विस्तार ॥
मध्य सुदर्शन मेरु बखान । भरत क्षेत्र ता दक्षिणमान॥२॥
मगध देश देशों शिरमणी । राजगृह नगरी अतिबनी ॥
श्रेणिक महाराज गुणवंत । रानी चेलनागृह शोभंत ॥३॥
धर्मवन्त गुणतेज अपार । राजा राय महागुणसार ॥
एक दिवसविपुलाचलवीर । आये जिनवर गुणगंभीर ॥४॥
चार ज्ञानके धारक कहे । गौतम गणधरसो सँग रहे ॥
छहऋतुके फल देखेनयन । वनमाली लेचालो ऐन ॥ ५ ॥
हर्ष सहित वनमाली भयो । पुष्प सहित राजा परगयो ॥

नमस्कार कर जोड़े हाथ। मोपर कृपाकरो नरनाथ॥६॥
विपुलाचल उद्यान कहंत। महामुनीश्वर तहां वसंत॥
सुन राजा अतिहर्षितभयो। बहुत दान मालीकोदयो॥७॥
सप्तध्वनि बाजे बाजंत। प्रजा सहित राजा चालंत॥
दे प्रदक्षिणा बैठो राव। जिनवर देखकरोचितचाव ८॥
द्वै विधि धर्मकहो समझाय। यासे पाप सर्व जर जाय॥
खग तहँ आयो एक तुरंत। सुंदर रूप महागुणवंत॥ ९॥
नमस्कार जिनवर को करो। जय जयकारशब्दउच्चसे॥
ताहि देख आश्चर्यितथयो। राजा श्रेणिक पूछतभयो॥१०
सेना सहित महागुणखानि। कोयह आयो सुंदर वाणि॥
याकी बात कहो समझाय। ज्ञानवंतमुनिवरतुमआय११॥
गौतम बोले बुद्धिअपार। विजयानगर कहो अतिसार॥
मनो कुंभ राजा राजंत। श्रीमती रानीको कैन्त१२॥
ताका पुत्र अरिंजय नाम। पुण्यवंत सुंदर गुणधाम॥
पूर्व तप कीनो इन जोइ। ताका फल भुगतेशुभसोइ१३
ताकी कथा कहूं विस्तार। जंबूद्वीप द्वीपमें सार॥
भरत क्षेत्र तामें सुखकार। कोशल देश विराजे सार १४
परम सुखदनगरतिहँजान। विप्र सोमशर्म्मा गुणखान॥
सो मिल्या भामिनता कही। दुख दरिद्रकी पूरितमही१५॥
पूर्व पाप किये अतिघने। ताको दुःख भुगतही बने॥
सुन राजा याका वृत्तान्त। नगर २ सो भ्रमें दुःखवन्त१६
देश विदेश फिरे सुखआश। तोहु न पावे सुक्ख निवास॥

भ्रमत २ सो आयो तहां । समोशरण जिनवरकोजहां १७

दोहा—अनंत नाथ जिन राजका, समोशरण तिहिवार॥
सुर नर अति हर्षित भये, देख महा द्युतिसार १८

चौपाई ।

विप्र देख अति हर्षित भयो । समोशरण वन्दनको गयो ॥
वन्दि जिनेश्वर पूछे सोइ । कहा पाप मैं कीनो होइ १९॥
दरिद्र पीड़ा दहे शरीर । सोतो व्याधि हरो गंभीर ॥
गणधर कहें सुनोद्विजराय । अनन्त व्रत कीजे सुखदाय २०
तबे विप्र बोलो कर भाय । किसविधि होइ सोदेहु बताय॥
किसप्रकार याव्रत कोकरों । कहो विधान चित्त में धरों २१
भादों मास, सुक्खकीखान । चौदश शुक्ल कही सुखदान ॥
करस्नान शुद्ध होजाय । तब पूजे जिनवर सुखदाय २२
गुरुवन्दन्स करे चिंतलाय । या विधि से व्रत लेय बनाय॥
त्रिकाल पूजे श्री जिनदेव । रात्रिजागरण कर सुख लेव २३
गीतरु नृत्य महोत्सवजान । धारा जिनवर करो बखान ॥
वर्ष चतुर्दश विधिसेधरे । ता पीछे उद्यापन करे॥२४॥
करे प्रतिष्ठा चौदह सार । या से पाप होइ जर क्षार ॥
झारी धारी अधिक अनूप । चरण कलश देवे शुभरूप २५
दीवट झालर संकल माल । और चँदोवे उत्तम जाल ॥
छत्र सिंहासन विधि से करे। ताते सर्व पाप परिहरे॥ २६ ॥
चार प्रकार दान दीजिये । याते अतुल सुक्ख लीजिये ॥
अन्तावस्था ले संन्यास । ताते मिले स्वर्गका बास २७॥

उद्यापन की शक्ति न होइ। कीजे व्रत दूनो भविलोइ ॥
विप्र कियोव्रतविधिसेआय। सर्व दुःख तसु गयो विलाय२८
अंतकाल धरके संन्यास। ताते पायो स्वर्ग निवास ॥
चौथे स्वर्ग देव सो जान। महाऋद्धि ताके सोवखान२९
विजयार्द्धगिरि उत्तम ठौर। काचीपुर पत्तन शिरमौर ॥
राजा तहँ अपराजित धीर। विजया तास प्रिया गम्भीर३०
ताका पुत्र अरिंजय नाम। तिन यह आयकरोसोप्रणाम ॥
कंचन मय सिंहासन आन। तापर नृप बैठो सुखखान३१॥
व्योमपटलविनशतलखसंत। उपजो चित वैराग महंत ॥
राजपुत्र को दयो बुलाय। आप लई दीक्षा शुभ भाय ३२
सही परीषह दृढ़चित धार। ताते कर्म भये अरि क्षार ॥
घाति घातिया केवल भयो। सिद्ध बुद्ध सो पद निर्मयो३३
रानीने व्रत कीनो सही। देव देह दिव अच्युतलही ॥
तहांसुसुख भुगतेअधिकाय। तहांसे आय भयो नरराय३४
राज ऋद्धि पाई शुभसार। फिर तपकर विधि कीने क्षार॥
तहां से मुक्ति पुरीकोगयो। ऐसा तिन व्रत का फल लयो३५
ऐसा व्रत पाले जो कोइ। स्वर्ग मुक्ति पद पावे सोइ ॥
विनयसागरगुरुआज्ञाकरी। हरिकिल पाठ चित्त में धरी३६
तब यहकथाकरीमनलाय। यथा शास्त्र में वरणी आय ॥
विधिपूर्वक पाले जो कोइ। ताके अजर अमर पद होइ३७

इति श्रीअनंतचौदशव्रतकथा सम्पूर्णम् ॥

अथ रत्नत्रय व्रत कथा भाषा ।

दोहा–अरहनाथको वन्दिके, वन्दों सरस्वति पाँय ॥
रत्नत्रय व्रत की कथा, कहूं सुनो मन लाय ॥१॥

चौपाई ॥

जंबूद्वीप भरत शुभ क्षेत्र । मगध देश सुखसम्पत्ति हेत ॥
राज गृह तहां नगर बसाय । राजा श्रेणिक राजकराय ॥२॥
विपुलाचल जिनवीरकुँवार । केवल ज्ञान विराजत सार ॥
माली आय जनावोदयो । तत्क्षण राजा वंदन गयो ॥
पूजा वंदन कर शुभसार । लागो पूछन प्रश्न विचार ॥
हे स्वामी रत्नत्रयसार । व्रत कहिए जैसा व्यवहार ४॥
दिव्यध्वनि भगवानबताय । भादों सुदि द्वादशि शुभ भाय॥
करस्नान स्वच्छ पटश्वेत । पहिनो जिन पूजन के हेत॥५॥
आठो द्रव्यलेय शुभ जाय । पूजो जिनवर मनवचकाय ॥
जीर्ण न्यूतन जिनके ग्रेह । बिंबधरावो तिन में तेह॥ ६ ॥
हेम रूप्य पीतलके यंत्र । तांबा यथा भोजके पत्र ॥
यंत्र करो बहु मन थिरदेउ । रत्नत्रयके गुण लिख लेउ ७॥
निश्शंकादिदर्शनगुणसार। संशय रहित सो ज्ञान अपार॥
अहिंसादि महाव्रतसार । चारित्र के ये गुणहैं धार ॥८॥
ये तीनों के गुणहैं आदि । इन्हें आदि जेते गुण वादि ॥
शिव मार्ग के साधन हेत । ये गुण धारे व्रती सुचेत ॥९॥

भादों माघ चैत्र में जान। तीनो काल करो भविआन ॥
याविधि तेरह वर्ष प्रमाण। भावना भावेगुणहिनिधान १०
लवंगादि अष्टोत्तर आन। जपो मंत्र मन कर श्रद्धाण ॥
पुनि उद्यापन विधि जो एह। कलशा चमरछत्रशुभदेह॥११
संग चतुर्विधिको आहार। वस्त्राभरण देउ शुभसार ॥
बिंब प्रतिष्ठा आदिअपार। पूजो श्रीजिन हो भवपार १२

दोहा

इस विधि श्रीमुख धर्म सुन, भनो चित्त धर भाय ॥
कौने फल पायो प्रभू, सो भाषो समझाय ॥ १३ ॥

चौपाई

जंबू द्वीप अलंकृत हेर। रहो ताहि लवणो दधिघेर ॥
मेरु से दक्षिण दिशिहैसार। है सो विदेह धर्म अवतार१४॥
कच्छवतीसुदेश तहां बसे। वीत शोक पुर तामें लसे ॥
वैश्रिव नाम तहां का राय। करे राज सुरपतिसम भाय १५
बनमाली ने जनावो दयो। विपुल बुद्धि प्रभु वन में ठयो ॥
इतनी सुन नृप वंदन गयो। दान बहुत मालीको दयो॥१६॥
हे स्वामी रत्नत्रयधर्म। मोसे कहो मिटै सब भर्म ॥
तबस्वामीनेसबविधिकही। जोपहिलेसोप्रकाशीसही॥१७॥
पंचामृत अविशेकसुठयो। पूजा प्रभु की कर सुखलयो ॥
जागिरनादि ठयोबहुभाय। इसविधिव्रतकर विश्रिवराय१८
भाव सहित राजाव्रतकरो। धर्म प्रतीति चित्त अनुसरो ॥
षोड़स भावनाभावतभरो। अंत समाधिमरणतिनकरो १९

गोत्र तीर्थंकर बांधोसार । जो त्रिभुवन में पूज्य अपार ॥
सर्वार्थ सिद्धि पहुँचोजाय । भयो तहां अहमेंद्र सुभाय२०॥
हस्तमात्र तनु ऊंचोभयो । तेतिससागर आयु सोलयो ॥
दिव्य रूप सुखकोभंडार । सत्य निरूपणअवधिविचार२१
सौ धर्मेन्द्र विचारी घरी । यच्छेश्वर को आज्ञा करी ॥
वेग देश निर्माप्यो जाय । थापो मथुरापुर अधिकाय२२॥
कुंभपुर राजा तहांवसे । देवी प्रजावती तिस लसे ॥
श्री आदिकतहांदेवीआय । गर्भसोधना कीनी जाय॥२३ ॥
रत्न वृष्टि नृप अंगन भई । पन्द्रह मासलों बरसत गयी ॥
सर्वार्थसिद्धिसे सुर आय । प्रजावती सुकुच्छउपजाय२४॥
मल्लि नाथ सो नामकोपाय। द्वैज चंद्र सम बढ़त सुभाइ ॥
जबविवाह मंगलविधिभई । तब प्रभुचितविरागतालई २५॥
दिक्षाधर बनमें प्रभु गये । घातिकर्महानि निर्मल ठये ॥
केवल ले निर्वाण सोजाय । पूजा करी सुरेशों आय॥२६॥
यहविधानश्रेणिक ने सुनो। व्रत लीने चित अपने गुणो ॥
भक्तिविनयकरउत्तम भाय। पहुँचे अपने गृहकोआय ॥२७
याविधि जो नर नारीकरे । सो भवसागर निश्चयतरे ॥
नलिनकीर्तिमुनिसंस्कृतकही । ब्रह्म ज्ञान भाषा निर्मही२८

(इति श्रीरत्नत्रयव्रतकथा भाषा सम्पूर्णम्)

अथ दशलक्षणव्रतकथा भाषा ।
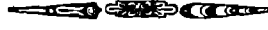
दोहा—प्रथम वन्दिजिनराजके, शारद गणधर पांय ॥
दशलक्षणव्रत की कथा, कहूं अगम सुखदाय ॥ १ ॥

चौपाई ॥

विपुलाचंल श्री वीरकुँवार । आये भवभंजन भरतार ॥
सुन भूपतितहांवंदनगयो । सकललोक मिल आनँदभयो२
श्री जिन पूजेमनधरचाव । स्तुति करी जोड़कर भाव ॥
धर्म कथातहांसुनीविचार। दान शील तप भेदअपार॥३॥
भव दुःख क्षायक दायक सर्म। भाषे प्रभु दशलक्षणे धर्म ॥
ताको सुन श्रेणिक रुचिधरी। गुरु गौतम से विनती करी ४
दश लक्षण व्रत कथा विशाल। मुझ से भाषो दीनदैयाल ॥
बोले गुरु सुन श्रेणिक चंद्र । दिव्यध्वनिकहीवीर जिनेंद्र ५॥
खंड धातु की पूर्व भाग । मेरु थकी दक्षिण अनुराग ॥
सीतोदा उपकंठी सही । नगरीविशालाक्षशुभकही ६॥
नाम प्रीतंकर भूपति बसे । प्रीयकरी रानी तसु लसे ॥
मृगांक रेखा सुता सुजान । मतिशेखर नामा सो प्रधान ७॥
शशिप्रभा ताकी वर नारि । सुता काम सेना निरधार ॥
राज सेठ गुण सागर जान । शीलसुभद्रा नारि बखान॥८॥
सुता मदन रेखा तसु खरी । रूप कला लक्षण गुण भरी ॥
लक्ष भद्र नामा कुतवाल । शशिरेखा नारी गुण माल९॥

कन्या तास घरे रोहिनी । ये. चारों वरणी गुरु तनी ॥
शास्त्र पढ़ें गुरु पास विचार । स्नेह परस्पर बढ़ो अपार १०
मास वसंत भयो निरधार । कन्या चारों वनहि मझार ॥
गईं मुनीश्वर देखे तहां । तिनको वन्दन कीनोवहां११॥
चारों कन्या मुनि से कही । त्रिया लिंग ज्यों छूटे सही ॥
ऐसा व्रत उपदेशो अबै । या से नर तनु पावें सबै १२॥
बोले मुनि दश लक्षण सार । चारों करो होहु भव पार ॥
कन्या बोलीं किम् कीजिये ।किसदिन से व्रत को लीजिये१३
तब गुरु बोले वचनरसाल । भादों मास कहो गुणमाल ॥
धवल पंचमी दिन से सार । पंचामृत अविषेक उतार १४
पूजार्चन कीजे गुण माल । जिन चौवीस तनी शुभसाल॥
उत्तम क्षमा आदि अति सार। दशमोब्रह्मचर्य गुणधार॥१५॥
पुष्पांजल्लेइसविधिदीजिये । तीनों काल भक्ति कीजिये ॥
इस विधिदशवासरआचरो । नियमितव्रत शुभकार्यकरो१६
उत्तम दशअनशनकरयोग । मध्यम व्रत कांजीका भोग ॥
भूमि शयनकीजेदशराति । ब्रह्मचर्य पालो सुख पांति १७
इसविधि दश वर्षजबजांय । तब तक व्रत कीजे धर भाय॥
फिर व्रत उद्यापनकीजिये । दान सुपात्रोंको दीजिये १८॥
ओषधि अभय शास्त्र आहार। पंचामृत अभिषेकहि सार ॥
माड़नो रचि पूजा कीजिये । छत्र चमर आदिक दीजिये१९
उद्यापनकी शक्ति न होइ । तो दूनो व्रत कीजे लोइ ॥
पुण्यतनो संचय भंडार । परभव पावे मोक्षसो द्वार २०॥

तब चारों कन्यों व्रतलायो। मुनिवर भक्तिभावलखिदयो॥
यथा शक्ति व्रत पूरणकरो। उद्यापन विधिसे आचरो२१॥
अंतकाल वे कन्या चार। सुमरण करो पंच नवकार॥
चारों मरणसमाधिसुकियो। दशवें स्वर्गजन्मतिनलियो२२
षोड़स सागर आयु प्रमाण। धर्म ध्यान सेवें तहां जान॥
सिद्धक्षेत्रमें करें विहार। क्षायकसम्यकउदयअपार२३
सुभग अवन्ती देशविशाल। उज्जयनी नगरी गुणमाल॥
स्थूल भद्रनामा नरपती। रानी चारुसो अति गुणवती॥
देव गर्भमें आये चार। ता रानीके उदर मझार॥
प्रथम सुपुत्र देव प्रभुभयो। दूजो सुत गुणचंद्रभाषियो२५
पद्म प्रभा तीजो बलवीर। पद्म स्वारथी चौथौ धीर॥
जन्म महोत्सवतिनकोकरो। अशुभदोषगृह दोनों हरो २६
निकल प्रभा राजाकीसुता। ते चारों परनी गुण युता॥
प्रथम सुतासो ब्रह्मी नाम। दुतिय कुमारीसो गुणधाम२७
रूपवती तीजी सुकुमाल। मृगाक्ष चौथी सो गुणसाल॥
करो व्याह घरको आइयो। सकललोक घरआनँदलियो॥
स्थूल भद्र राजा इक दिना। भोग विरक्त भयो भवतना॥
राजपुत्रको दीनो सार। वनमें जाय योगशुभधार२९॥
तपकर उपजो केवल ज्ञान। वसु विधि हनि पायोनिर्वाण॥
अब वे पुत्र राजको करें। पुण्यका फल पावें ते घरें ३०
चारों बांधव चतुर सुजान। अहि निशिधर्मतनोफलमान॥
एक समय विरक्त सो भये। आतम कार्य चितवतठये ३१

चारों बांधव दिक्षालई। वनमें जाय तपस्या ठई॥
निज मनमें चिद्रूपाराधि। शुक्लध्यानको पायो साधि३२
सर्व विमल केवल ऊपनो। सुख अनंत तबही सोठनो॥
करो महोत्सव देवकुमार। जय २ शब्दभयोतिहिवार३३
शेष कर्म निर्बलतिन करे। पहुँचे मुक्ति पुरीमें खरे॥
अगम अगोचरभवजलपार। दश लक्षण व्रतके फलसार३४
वीरजिनेश्वर कही सुजान। शीतल जिनके बाड़े मान॥
गौतम गणधर भाषीसार। सुन श्रेणिक आये दरबार३५
जो यह व्रत नर नारी करे। ताके गृह सम्पति अनुसरे॥
भट्टारक श्री भूषणवीर। तिनके चेला गुणगंभीर ३६॥
ब्रह्मज्ञान सागर सुविचार। कही कथा दशलक्षणसार॥
मन वच तन व्रत पाले जोइ। मुक्ति वरांगणा भोगेसोइ३७॥

इति श्रीदशलक्षण व्रतकथा भाषा सम्पूर्णम्।

अथ मुक्तावलीव्रतकथा।

दोहा—ऋषभ नाथके पदनमों, भविसरोज रविजान॥
मुक्तावलिव्रतकी कथा, कहूं सुनो धरध्यान॥१॥
मगधदेश देशोंमें प्रधान। तामें राजगृह शुभथान॥
राज्यकरे तहांश्रेणिकराय। धर्मवंतसबको सुखदाय॥२॥
ता गृह नारि चेलनासती। धर्म शील पूरण गुणवती॥

इकदिनसमोशरणमहावीर ।, आयो विपुलाचलपरधीर ३ ॥
सुन नृपअत्यानंदितभयो । कुटुम सहित वंदनको गयो ॥
पूजाकरबैठो सुख पाय । हाथ जोड़कर अर्ज कराय॥४॥
हेप्रभु मुक्तावलि व्रतकहो । यह कर कौने क्या फल लहो ।
तब गौतम बोले हर्षाय । सुनो कथा मुक्तावलि राय॥५॥
याही जंबूद्वीपमझार । भरत क्षेत्र दक्षिण दिशि सार ॥
अंग देश सोहे रमनीक । नगर बसे चंपापुर ठीक ॥ ६ ॥
नगरमध्य एकब्राह्मणबसे । नाम सोमशर्म्मा तसुलसे ॥
ता गृह एकसुताजो भई । यौवन मदकर पूरण ठई ॥ ७ ॥
एक दिन देखे श्री गुरु जबे । नग्न गात सो निंदेतबे ॥
अति खोटे दुर्वचनकहाय । बहुत ही ग्लानि चित्त मलाय८॥
ताकर महापाप बांधियो । अवधि व्यतीतेमरण जुकियो ॥
नरक जाय नानादुखसहे । छेदन भेदन जाय नकहे ॥ ९॥
नरक आयु पूरी कर जोइ । भवभ्रमि द्विजगृह पुत्री होइ ॥
निर्नामिका पड़ातिसनाम । अतिदुर्गंधादेहनिकाम ॥१० ॥
कोई ढिग आवे नाहिं तहां। क्रम कर कैड़ी भई सोवहां ॥
अन्न पानकरदुःखितमहा । जूठन भखे कष्ट अतिलहा ११॥
एक दिवस देखे मुनिराइ । कर प्रगाम विनवे शिरनाइ ॥
कौन पाप मैं कीनो देव । मैं पायो अति दुःखअभेव १२॥
तब मुनिवर पूर्व भवकहे । गुरु की निंदासे दुःखलहे ॥
तब दुर्गंधा जोड़े हाथ । ऐसा व्रत दीजे मोहिं नाथ १३ ॥
यासे रोग शोकसब जाय । उत्तम भव पाऊं गुरुराय ॥

तबश्री गुरु बोले हर्षाय । मुक्तावलीकरो मनलाय ॥१४॥
तासे सर्व पाप जर जाय । सुख सम्पत्ति मिले अधिकाय ॥
तब दुर्गंधा कहे विचार । कौन भांति कीजे.व्रत सार॥१५
तब मुनिवर इम वचन कहाइ । सुनोभेद व्रतका चितलाइ॥
भादोंसुदिसप्तमिदिनहोइ । तादिन व्रतकीजेभविलोइ॥१६॥
प्रातसमेयजिनमंदिरजाइ । पूजा कथा सुनो मनलाइ ॥
सब आरंभ तजोदिनमान। संयम शील सजोगुणखान॥१७
भोर भये जिन दर्शनकरो। शुद्ध अशनकीजे तब खरो ॥
दूजो व्रत पूर्ववतकरो ।अश्विन बदि छठिपापनिहरो१८
तीजो व्रत कीजे उरधार । अश्विन बदि तेरसि सुखकार ॥
करउपवासपालोगुणरसी । चौथो अश्विनसुदिग्यारसी१९॥
पंचम व्रत कीजे मन लाइ । कार्तिक बदि बारसि सुखदाइ॥
फिर छठवां उपवास सुजान। कार्तिक शुक्लतीजगुणखान२०
सप्तम व्रत जिनवरने कहो। कार्तिक सुदिग्यारसिशुभलहो
फेर करो अष्टम व्रत लोइ । मार्गबदिग्यारसिजबहोइ २१॥
नवमों व्रत मार्गसुदि तीज । ये व्रत धर्म वृक्षके बीज ॥
याविधिकरो नववर्षप्रमान । मनवचकाय शुद्धताठान२२॥
जब व्रत पूर्ण होइ निदान । उद्यापन कीजे गुणवान ॥
श्री जिनवरअभिषेककराइ । करो माड़नोजिनगृहजाइ२३॥
अष्ट प्रकारी पूजा करो । जन्म २ के पातक हरो ॥
यथा शक्तिउपकरणबनाय । श्री जिनधाम चढ़ावो जाय२४
उद्यापनकी शक्ति न होइ । तो दूनो व्रत कीजे लोइ ॥

सब विधि सुन दुर्गंधाबाल ।मन वच तन व्रत लीनोहाल२५
गुरुभाषिततिनविधिसेंकियो । पूर्व भव अघ पानी दियो ॥
ता फल नारि लिंगछेदियो । सौधर्म स्वर्ग देव सो भयो२६
तहां आयु पूरण कर सोइ । चलत भयो मथुरा को लोइ ॥
श्रीधर राजा राज करंत । ताके सुत उपजो गुणवंत२७
नाम पद्मरथ मंडित भयो । एक दिवस वन क्रीड़ागयो ॥
गुफा मध्यमुनिवरकोदेख । वन्दनकरसुनधर्म विशेष२८॥
तहां पूछे मुनिवर से सोइ । तुमसे अधिक प्रभाप्रभु कोइ॥
तब मुनिवर बोले सुन बाल ।बासपूज्य जिनदीप्तिविशाल२९
चंपापुर राजें जिनराज । तेज पुंज प्रभु धर्म जहाज ॥
यह सुन धर्म विषेचित दयो।समोशरण जिन वंदन गयो३०
नमस्कार कर दिक्षालई । तपकर गणधर पदवी भई ॥
अष्ट कर्म इस विधिसेजार । पहुंचो शिवपुर सिद्धमंझार३१
लखोभव्यव्रतकासोप्रभाव । राजभोगि भयो शिवपुरराव॥
जो नर नारि करे व्रत सार। सुर सुखलहिपाविभव पार३२॥
इति श्रीमुक्तावली व्रतकथा सम्पूर्णम्

अथ श्रीरविव्रतकथा ॥

चौपाई ॥

श्रीसुखदायकपार्स जिनेश । सुमति सुगति दाता परमेश ॥
सुमरों शारद पद अरविंद । दिनकर व्रत प्रगटो सानंद१
वाणारस नगरी सु विशाल । प्रजापालि प्रगटो भूपाल ॥

मतिसागर तहांसेठसुजान । ताका भूप करे सन्मान ॥ २ ॥
तास त्रिया गुणसुंदरिनाम । सात पुत्र ताके अभिराम ॥
षट सुत भोगकरें परणीत ।बाल रूप गुण धर सुविनीत३॥
सहस्रकूटशोभितजिनधाम । आये यतिपति खंडितकाम ॥
सुन मुनि आगम हर्षितभये। सर्व लोग वन्दनको गये ॥४॥
गुरु वाणी सुनके गुणवती । सेठिन तब जोकरी वीनती ॥
व्रतप्रभुसुगमकहोसमझाय । जासे रोग शोक सब जाय५॥
करुणा निधि भाषें मुनिराय। सुनो भव्य तुम चित्तलगाय॥
जब अषाढ़सितपक्षविचार । तब कीजे अंतम रविवार॥६॥
व्रत करे अथवालघुआहार । लवणादिक जो करे परिहार॥
नवफल जुत पंचामृत धार । वसुप्रकार पूजो भवहार ॥७॥
उत्तम फल इक्यासी जान । नव श्रावक घर दीजे आन ॥
या विधि करोनववर्षप्रमाण । याते होय सर्व कल्याण॥८ ॥
अथवा एक वर्ष एक सार । कीजे रविव्रतमनहि विचार ॥
साहुन सुन निजघरकोगई । व्रत निंदासे निंदित भई॥९ ॥
व्रत निंदासे निर्धन भये । सात पुत्र अयोध्यापुरगये ॥
तहां जिनदत्तसेठ गृह रहें । पूर्व दुःकृतका फल लहें १०॥
मात पितागृहदुःखितसदा । अवधि सहित मुनिपूछेतदा ॥
दयावंत मुनि ऐसे कहो ।व्रत निंदासे तुम दुःख लहो११
सुन गुरुवचनबहुरिव्रतलयो । पुण्य कियो घरमें धनभयो॥
भवि जनसुनो कथा सम्बन्ध। जहां रहतथे वेसबनन्द १२॥
एक दिवसगुणधरसुकुमार । घासलेय आये गृह द्वार ॥
क्षुधावंत भावज पर गये । दंत विना नहिं भोजनदये१३ ॥

बहुरि गये जहां भूलोदन्त। देखो तासे अहि लिपटंत॥
फनपतिकोतहांविनतीकरी। पद्मावति प्रगटी सुंदरी॥१४॥
सुंदर मणिमय पारसनाथ। प्रतिमापंचरत्नशुभ हाथ॥
देकर कहो कुँवरकर भोग। करो क्षणक पूजा संयोग १५
आनबिंब निज घरमें धरो। तिहकर तिनको दारिद्र हरो॥
सुख विलसत ते वेसव नंद। दिनप्रति पूजें पार्स जिनेंद्र१६
साकेता नगरी अभिराम। जिन प्रसाद राचोशुभधाम॥
करी प्रतिष्ठा पुण्य संयोग। आये भविजन सँगसोलोग१७
संग चतुर्विधिको सन्मान। कियो दियो मनवांछितदान॥
देख सेठ तिन की सम्पदा। जाय कही भूपति से तदा१८
भूपति तब पूछो वृत्तान्त। सत्य कहो गुण धर गुणवन्त॥
देख सुलक्षण ताको रूप। अत्यानन्द भयो सो भूप १९
भूपति गृह तनुजा सुंदरी। गुणधर को दीनी गुण भरी॥
कर विवाह मंगल सानन्द। हय गय पुरजनपरमानन्द२०
मन वांछितपायेसुखभोग। विस्मित भये सकल पुरलोग॥
सुख से रहतबहुतदिन भये। तब सबबन्धु बनारस गये२१
माता पिताके परशे पांय। अत्यानन्द हृदय न समाय॥
विघटो विषम विषम वियोग। भयो सकलपुरजनसंयोग२२
आठ सात सोलहकेअंक। रवि व्रतकथा रची अकलंक॥
थोड़े अर्थ ग्रंथविस्तार। कहें कवीश्वर जोगुण सार२३॥
यह व्रतजो नर नारी करें। सो कबही दुर्गति नहिंपरें॥
भाव सहितसोसबसुखलहें। भानुकीर्ति मुनिवर इमकहें२४

इति श्रीरविव्रतकथा सम्पूर्णम्॥

अथ पुष्पांजलिव्रतकथा ॥

दोहा—वीरदेवकोप्रणमिकर, अर्चा करों त्रिकाल ॥
पुष्पांजलि व्रतकी कथा, सुनो भव्य अघ टाल ॥ १ ॥

चौपाई ॥

पर्वत विपुलाचल पर आय। समोशरण जिनवरका पाय ॥
तहँसुनराजा श्रेणिकराय। वन्दनचलेप्रियायुत भाय ॥ २॥
वंदन कर पूछे नृप तबे। हे प्रभु पुष्पांजलि व्रत अबे ॥
मोसे कहो करोंचितलाय। कोने करो कहाफल आय ॥३॥
बोले गौतम वचन रसाल। जंबूद्वीप मध्य सो विशाल ॥
सीतानदी दक्षिणदिशिसार। मंगलावती सुदेश अपार॥४॥
दोहा—रत्न संचय पुर तहां,वज्रसेन नृप आय ॥
जमावती वनिता लसे, पुत्र विहूनी थाय ॥ ५ ॥

चौपाई ॥

पुत्र चाह जिन मंदिर गई। ज्ञानोदधि मुनि वंदति भई ॥
हे मुनि नाथ कहो समझाय। मेरे पुत्र होइ के नायि ॥ ६ ॥
दोहा—मुनि बोले हे बालकी, पुत्र होइ शुभसार ॥
भूमि छखंड सु साधिहै, मुक्ति तनो भरतार ॥ ७ ॥
सुनके मुनिके वचन तब, उपजो हर्ष अपार ॥
क्रम से पूरे मास नव, पुत्र भयो शुभसार ॥ ८ ॥
यौवनवयससो पायके, क्रीड़ा मंडप सार ॥
तहां व्योम से आइयो, खग भूपर तिस वार ॥ ९ ॥

रत्न शेखर को देख कर, बहुत प्रीति उरमाहि ॥
मेघबाहन ने पांचसो, विद्या दीनी ताहि ॥ १० ॥

चौपाई ॥

दोनों मित्र परस्पर प्रीति । गये मेरु वन्दन तज भीति ॥
सिद्ध कूट चैत्यालय वंदि । आये पंचचित्त आनंदि ॥११॥
ताकी शखी जनाई सार । बेग स्वयम्बर करो तयार ॥
भूरि भूप आये तत्काल । माल रत्न शेखर गल डाल १२॥
धूमकेतु विद्याधर देख । क्रोध कियो मन माहिं विशेष ॥
कन्या काज दुष्टता धरी । विद्या बल बहु माया करी १३॥
रत्नशेखर से युद्धसोकरो । बहुत परस्पर विद्या धरो ॥
जीतो रत्नशेखर तिसबार । पाणिग्रहण कियोव्यवहार १४॥
मदन मजूषा रानी संग । आयो अपने ग्रेह अभंग ॥
वज्रसेनकोकरनमस्कार । माततातमनसुक्खअपार १५॥
एकदिनामंदिरागिरि योग । पहुँचे मित्र सहित सबलोग ॥
चारण मुनि वंदेतिहिवार । सुनो धर्म चित भयोउद्दार १६॥
हे मुनि पूर्व जन्मसम्बन्ध । तीनोंके तुमकहो निवन्ध ॥
तब मुनि कहें सुनौ चितधार ।एकमृणालनगरसुखकार१७
नृप मंत्रीएकतहांश्रुतकीर्ति। बन्धुमतीवनिताअतिप्रीति ॥
एक दिना बन क्रीड़ा गयो । नारी संगरमतसोभयो ॥१८॥
पापी सर्पसो भक्षण करी । मंत्री मृतक लखी निज नरी ॥
भयोविरक्तजिनालयजाय । दिक्षा लीनी मन हर्षाय ॥१९॥
यथा शक्ति तप कुछ दिनकरो । पाछे भ्रष्टभयो तपटरो ॥

गृहआरंभकरनचितठनो । तब पुत्री मुख ऐसे भनो॥२० ॥
तातजोमेरुचढ़ोकिहिकाज। फिर भवसिंधु पड़ेतजलाज ॥
यों सुन प्रभावतीवचसार । मंत्री कोपकियोअधिकार॥२१॥
तबविद्याको आज्ञा करी । पुत्री को ले वनमेंधरी ॥
विद्या जब वनमेंलेगई । प्रभावती मन चिंता भई॥२२॥
अरहंत भक्तिचित्तमेंधरी । तब विद्या फिर आई खरी ॥
हे पुत्री तेरा चित जहां । बेगबोलपहुचाऊं तहां ॥ २३ ॥
पुत्री कहीकैलाशके भाव । जिन दर्शनकोअधिकहीचाव ॥
पूजाकरके बैठीवहां । पद्मावति आई सो तहां ॥२४॥
इतने मध्य देव आइयो । प्रभावती तब पूछन लयो ॥
हे देवी कहिए किसकाज । आये देवीदेवसो आज ॥२५॥
पद्मावति बोली वचसार । पुष्पांजलि व्रत है सुअवार ॥
भादों मास शुक्ल पंचमी । पंच दिवस आरंभनअमी॥२६॥
प्रोषधयथाशक्तिव्यवहार । पूजो जिन चौवीसी सार ॥
नानाविधि के पुष्पजोलाय। करो एकमाला जोबनाय२७॥
तीन काल वह माला देय । बहुत भक्ति से विनय करेय ॥
जपो जाप शुभमंत्रविचार। या विधि पंचवर्ष अवधार ॥२८
उद्यापन कीजे पुनिसार । चार प्रकार दान अधिकार ॥
उद्यापन की शक्ति नहोइ। तोदूनोव्रतकीजे लोइ ॥ २९ ॥
यह सुन प्रभावती व्रतलयो। पद्मावती कृपा कर दयो ॥
स्वर्ग मुक्तिफल का दातार। है यह पुष्पांजलि व्रतसार ३०
दोहा—पद्मावति उपदेशसे, लीना व्रत शुभसार ॥

पृथ्वी पर सो प्रकाशिके, कियो भक्ति चितधार ३१॥
तप विद्या श्रुत कीर्तिने, पाई अति जो प्रचंड ॥
प्रभावती व्रत खंडने , आई सो बलबंड ॥ ३२ ॥

चौपाई ॥

बासर तीन व्यतीते जबे । पद्मावति पुनि आई तबे ॥
विद्या सब भागी तत्काल । करोसंन्यास मरण तिसबाल ३३
कल्प सोलहवेंमध्यसोजान । देव भयोसो पुण्य प्रमाण ॥
तहां देवने कियो विचार । मेरा तात भ्रष्ट आचार॥३४॥
मैं सम्बोधों वाको अबे । उत्तम गति वह पावें तबे ॥
यही विचार देव आइयो । मरण सन्यास तातकोकियो॥
वाही स्वर्ग भयो सो देव । पुण्य प्रभाव लयो फलएव ॥
बंधु मती माताका जीव । उपजाताही स्वर्ग अतीव३६॥

दोहा—प्रभावतीका जीव तू, रत्नशेखर भयो आय ॥
मातका जो जीव है, मदन मजूषा थाय ॥३७॥

चौपाई॥

श्रुतकीर्तिकोजीव जो तहां । मंत्री मेघवाहन है यहां ॥
ये तीनोंके सुन पर्याय । भईसो चिंता अंगन माय ३८
सुनव्रतफलअरुगुरुकीवानि । भयो सुचित व्रतलीनोजानि॥
अपने थान बहुर आइयो । चक्रवर्ति पदभोग सुकियो३९
समय पाय वैराग सो भयो । राज भार सब सुतको दयो ॥
त्रिगुप्ति मुनिकेचरणोंपास । दिक्षालीनी परमहुलास ॥४०॥
रत्न शेखर दिक्षाली जबे । भये मेघवाहन मुनि तबे ॥

भविजीवोंको अतिसुखकार। केवलज्ञान उपाजों सार ४१॥
घाति कर्म निर्मूल सुकरे । पाछे मुक्ति पुरी अनुसरे ॥
या विधि व्रत पाले जोकोइ । अजर अमर पद पावेसोइ ४२
इति श्रीपुष्पांजलिव्रतकथा सम्पूर्णम् ।

अथ नंदीश्वरव्रतकथा ॥

दोहा ॥

चरण नमों जिन राजके, जाते दुरित नशाय ॥
शारद वंदों भावसे, सद्गुरु सदा सहाय ॥ १ ॥

चौपाई

जंबू द्वीप सुदर्शन मेरू । रहो ताहि लवणोदधि घेर ॥
मेरु से दक्षिण भारत क्षेत्र । मगध देश सुख सम्पति हेतु२
राज गृह नगरी शुभ बसे । गढ़ मठ मंदिर सुंदर लसे ॥
श्रेणिक राज करे सु प्रचंड । जिनलीनो अरिगणपरदंड॥३॥
पटरानी चेलना सुजान । सदा करे जिन पूजा दान ॥
सभा मध्य बैठो सो राय । बनमाली शिरनायो आय॥४॥
दो कर जोड़ करे सो सेव । विपुलाचल आये जिन देव ॥
वर्द्धमान को आगम सुनो । जन्म सफल चित अपनेगुनो५
राजा रानी पुरजन लोग । वंदन चले पूजने योग ॥
चलत २ सो पहुँचे तहां । समोशरण जिनवर का जहां६
दे प्रदक्षणा भीतर गये । वर्द्धमान के चरणों नये ॥

पुनिगणधरकोकियोप्रणाम । हर्षित चित्त भयो अभिराम७॥
दशविधिधर्मसुनोजिनपास । जाते गयो चित्तका त्रास ॥
दो करजोड़नृपतिवीनयो । अति प्रमोद मेरे मन भयो८॥
प्रभु दयालुअबकृपा करेव । व्रत नंदीश कहो जिन देव ॥
अरुसबविधिकहियेसमझाय। भाव सहित यों पूछो राय९॥
अवधिज्ञान धरमुनिवरकहें । कौशल देश स्वर्ग सम रहें ॥
ताके मध्य अयोध्यापुरी । धनकणसुखीछत्तीसोकुरी१०॥
तिहि पुर राजकरेहरिसेन । त्याग तेग बल पूरणसेन ॥
वंश इक्ष्वाकु प्रगट चक्रवे । ताकी आनि खंड षटचवे ११
पाट बंध रानी नृप तीन । गंधारी जेठी गुण लीन ॥
प्रियमित्रा रूपश्री नाम । साधे धर्म अर्थ अरु काम१२॥
सुख से रहतबहुतादिनभये । ऋतु वसंत बन राजा गये ॥
जल क्रीड़ा बन क्रीड़ाकरें । हास्य विलासप्रीतिअनुसरें१३
ताबनमध्य कल्पद्रुममूल । चंद्रकांति मणि शिला निकूल
मंडपलताअधिक विस्तार ।चारण मुनि आये तिहिंवार१४
आरिंजय अमितंजय नाम ।सोम दयालु धर्मके धाम ॥
राजा रानी पुरजन नारि ।देखे मुनि तिन दृष्टि पसारि१५
सब नर नारि अनंदित भये। क्रीड़ा तज मुनि वन्दन गये ॥
त्रिया पुरुष चरणों अनुसरे । अष्ट द्रव्य मुनिपूजे खरे १६॥
धर्म ध्यान कहो मुनिराय । श्रद्धा सहित सुनो कर भाय ॥
राजा प्रश्न करी मुनि पास । सुनो धर्म भयोचित्तहुलास१७

दल बलसहितसम्पदाघनी । और भूमि षट खंड जोतनी ॥
महा पुण्य जोयहफल होइ । गुरु बिन ज्ञान न पावे कोइ १८
बार २ विनवे कर सेव । पूर्व कहो भवान्तर देव ॥
अवधि ज्ञान बल मुनिवरकहे। पुर अहिक्षेत्र बनिकएक रहे॥
सुखित कुवेर मित्रता नाम । साधे धर्म अर्थ अरु काम ॥
जेष्ठ पुत्र श्रीवर्म्म कुमार । मध्यम जयवर्मा गुणसार २०॥
लघुजयकीर्तिकीर्तिविख्यात। तीनों शुभ आनंदित गात ॥
एक दिवशउपजोशुभकर्म । वनमें आये मुनि सौधर्म २१॥
सेठ पुत्र मुनिवर वंदियो । श्रीवर्म्मा जो अठाई लियो ॥
नंदीश्वरव्रत विधिसे पाल । भव २ पाप पुंजको जाल२२
अंत समाधि मरणको पाय । इस पुर वज्रबाहु नृप आय ॥
ताके विमला रानी जान । तुम हरिसेन पुत्रभयेआन२३
पूर्व व्रत पालो अभिराम । ताते लहो सुक्खको धाम ॥
जयवर्म्मा जयकीर्तिवीर । निकट भव्यगुणसाहसधीर२४
वन्दे गुरूजो धुरंधर देव । मन वच काय करी बहुसेव ॥
तब मुनिपंच अनुव्रत दिये । दोनों भावसहितव्रतलिये २५
अरु नंदीश्वरव्रततिनलियो । अंत समाधिमरणतिनकियो॥
हस्तनागपुर शुभ जहांबसे । तहांविमल वाहन नृपलसे२६
ताके नारि श्रीधरा नाम । आरिंजय अमितंजय धाम ॥
पुत्र युगल हम उपजे तहां । पूर्व पुण्य फल पायो जहां२७
गुरु समीप जिन दक्षालई । तप बल चारण पदवी भई ॥
यासे हम तुम पूर्व भ्रात । देखत प्रेम ऊपजो गात२८ ॥

पूर्व व्रत नंदीश्वर कियो। ताते राज चक्र पद लियो ॥
अब फिर व्रतनंदीश्वर करो। ताते स्वर्ग मुक्ति पद धरो २९
तब हरिसेन कहे कर जोर। व्रत नंदीश्वर कहो बहोर ॥
मुनिवर कहें द्वीप आठमो। तास नाम नंदीश्वर नमो ३०॥
ताके चहुँदिशि पर्वत परे। अंजनदधिमुख रतिकरधरे ॥
तेरह तेरह दिशि दिशि जान। ये सब पर्वत बावन मान ३१
पर्वत पर्वत पर जिन ग्रेह। वह परिमाण सुनो कर नेह ॥
सौ योजन ताका आयाम। अरु पचासविस्तारसुताम ३२
उन्नत है योजन पच्चीस। सुर तहँ आय नवामें शीश ॥
अष्टोत्तर सौ प्रतिमाजान। एक २ चैत्यालय म्यान ३३॥
गोपुर मणिमय केसुप्रकार। छत्र चमर ध्वजवंदनवार ॥
प्रातिहार्य विधिशोभाभली। जिन रवि कोटिसोमछविछली
तास द्वीप में सुरपतिआय। पूजा भक्ति करे बहु भाय ॥
देव अव्रती व्रत नहींकरें। भाव भक्ति करपातिक हरें ३५
तास द्वीप सम्बन्धी सार। व्रत नंदीश्वर को अधिकार ॥
यहांकहोजिनवरसुप्रकाशि। आदि अनादि पुण्य कीराशि॥
जो व्रत भव्य भाव से करें। भव २ जन्म जरामय हरें ॥
ता व्रतकोसुनियेअधिकार। वर्ष २ में त्रय २ वार ॥३७॥
आषाढ़ कार्तिक अरुजोफाग। शाखा तीनकरो अनुराग ॥
आठो दिन आठें पर्यंत। भक्ति सहित कीजे व्रतसंत॥३८
सातेंको एकासन करो। कर संयम जिनवर मनधरो ॥

आठें के दिनकरउपवास। जासे छुटे कर्मकात्रास ॥३९॥
करो प्रथम जिनका अभिषेक। जातेपातिक जांय अनेक ॥
अष्ट प्रकारी पूजाकरो। मुख परमेष्ठि पंचउच्चरो ॥४०॥
तादिन व्रतनंदीश्वर नाम। ताकाफल सुनियो अभिराम ॥
फल उपवासलक्षदशजान।श्रीजिनवरने करोबखान ॥४१॥
दूजे दिन जिनपूजाकरो। पात्र दान दे पातिकहरो ॥
अष्टविभूतिनाम दिनसोइ। तादिन एकासनकरलोइ॥४२॥
फल उपवाससहस्रदशहोइ। अब तीजो दिन सुनियेलोइ ॥
जिनपूजा करपात्रहि दान। भोजनपानी भात प्रमाण४३ ॥
नाम त्रिलोकसारदिनकहो। साठलाख प्रोषधफललहो ॥
चतुर्थदिनकर आमोदर्य। नाम चतुर्मुख दिनसोहर्य४४ ॥
तहां उपवासलक्षफलहोइ। पंचम दिनविधिकरियो सोइ ॥
जिनपूज। एकासनकरो। हयलक्षणजुनामदिनधरो॥४५॥
फल चौरासी लक्ष उपास। जासे जाय भ्रमण भव त्रास ॥
षष्टम दिन जिनपूजादान। भोजन भातआमिलीपान ४६॥
तादिन नाम स्वर्गसोपान। व्रत चालीसलक्ष फलजान ॥
सप्तमदिन जिन पूजा दान। कीजे भविजनकासन्मान ४७॥
सब सम्पत्तिनामदिनसोइ। भोजनभात त्रिवेलीहोइ ॥
फल उपवासलक्षकोजान। अष्टम दिनव्रतचितमेंआन४८॥
कर उपवास कथा रुचि सुनो। पात्र दान दे सुकृत गुनो ॥
इंद्रध्वजव्रत दिनतसनाम। सुमरो जिनवरआठोजाम॥४९॥

तीन कोड़िअरु लाखपचास । यह फल होइ हरे सब त्रास॥
यह विधि आठवर्ष में होइ । भाव सहितकीजेभविलोय५०॥
उत्तम सातवर्षविधिजान । मध्यमपांच तीनलघुमान ॥
उद्यापन विधिपूर्वक सचो । वेदी मध्य माडनोरचो ॥५१॥
जिन पूजारुमहाअभिषेक । चंद्रोपमध्वज कलश अनेक ॥
छत्र चमर सिंहासन करो । बहु विधि जिनपूजो अघ हरो॥
चारो दान सुपात्रहि देउ । बहुत भक्तिकर विनय करेउ ॥
बहु विधि जिनप्रभावनाहोइ। शक्ति समान करो भविलोइ॥
उद्यापन की शक्ति नहोइ । तो दूनो व्रत कीजोलोइ ॥
जिनयहव्रतकीनोअभिराम । तिन पद लयो सुक्खका धाम॥
यह व्रत पूर्वमहा फललियो । प्रथम ऋषभ जिनवरने कियो॥
अनंतवीर्य अपराजितपाल । चक्रवर्ति पदवी भई हाल ५५
श्रीपाल मैना सुंदरी । व्रत कर कुष्ट व्याधिसबहरी ॥
बहुतक नर नारी व्रत करो । तिनसबअजरअमरपदधरो५६
सुनो विधान राय हरिसेन । अति प्रमोद मुख जंपेबैन ॥
सबपरिवारसहितव्रतलयो । मुनिवर धर्मप्रीतिकर दयो ५७
व्रत कर फिर उद्यापनकरो। धर्म ध्यानकर शुभ पदधरो ॥
अंत समाधि मरण को पाय। भयो देव हरिसेन सुराय ॥५८
पर्यायान्तर जैहे मुक्ति । श्रेणिक सुनी सकल व्रत युक्ति॥
गौतमकहो सकलअधिकार। सुनो मगधपति चित्तउदार५९
जो नर नारी यह व्रत करें । निश्चय स्वर्ग मुक्ति पद धरें ॥

संकट रोगशोक सब जाहिं। दुःख दरिद्रता दूर बिलाहिं६०
यह व्रत नंदीश्वर कीकथा। हेमराज सु प्रकाशीयथा॥
शहर इटावा उत्तम थान। श्रावक करें धर्मशुभध्यान६१
सुने सदा ये जैन पुराण। गुणी जनोंका राखें मान॥
तिहिठा सुना धर्म सम्बन्ध। कीनीकथा चौपई बंध ६२॥
कहें सुनें देवें उपदेश। लहें भाव से पुण्य अशेष॥
जाके नाम पापमिट जांय। ता जिनवर के वन्दों पांय६३

इति श्रीनंदीश्वरव्रतकथा सम्पूर्णम्॥

इति नाथूराम मास्तर कृत जैन व्रतकथा संग्रह समाप्त॥

सब प्रकारकी पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना—मुंबई.

विज्ञापन ।

हमारी दूकान पर संस्कृत, भाषा, अरबी, फारसी, उर्दू और अंगरेज़ी में अनेक प्रकार की पुस्तकें बिकती हैं। स्कूली व धर्म सम्बन्धी तथा ज्योतिष, वैद्यक, पुराण, वेदान्त, वैदिक कर्मकाण्ड, कोष, व्याकरण, काव्य, किस्से, रागनी, नाटक, शेर- संगीत, लावनी, लीला, कवित्तादि बंबई, कलकत्ता, लाहौर, देहली, मेरठ, मथुरा, आगरा, फर्रुखाबाद, कानपुर, लखनऊ, काशी, प्रयाग, उज्जैन, जोरी आदि, अनेक प्रेसों की छपी पुस्तकें विक्रियार्थ तैयार रहतीहैं । और किफायत से दीजाती हैं। जिन साहिबोंको चाहिये वेल्यूपेबिल द्वारा या टिकट भेजकर तलब करलेवें। और जो पुस्तकें हमारी बनाई वा छपवाई हैं उनपर कमीशन भी दिया जायगा कमीशन १५) रु० सैकड़े से ३०) रु० सैकड़े तक है यानी थोड़ी खरीदने वालोंको १५) रु० सैकड़ा, अधिक वालोंको ३०) रु० सैकड़ा और जो हमारी बनाई हैं परंतु छापने का अधिकार खेमराजको दियाहै उनपर कमीशन नहीं मिलेगा और जो साहब हमारी बनाई छपाई पुस्तकों से तबादिला करेंगे उनसे तबादिला भी किया जावेगा ॥